भाषा विज्ञान का स्वरूप -

आरंभ में इसे Comparative Grammar कहा जाता था। 19 वीं सदी में तुलना पर बल दिए जाने के कारण इसे ब्वउचंतंजपअम च्ीपसंसवहल कहा जाने लगा। फ्रांसीसी में Philalogy का प्रयोग पाठ विज्ञान के लिए होता था और अंग्रेजी व जर्मनी में भाषा के साथ साहित्य व शैली के अध्ययन के लिए भी Philalogy का प्रयोग किया जाता है। अंग्रेजी में इसके लिए Science of Language भी चलता है। 19 वीं सदी के चैथे दशक (1860) में इसे Lingvistics भी कहा जाने लगा।

भारत में ठीक आज के अर्थ में तो भाषा-विज्ञान जैसा विषय पहले नहीं था किन्तु इससे संबंधित अर्थों में निर्वचन शास्त्र, व्याकरण, शब्दानुशासन तथा शब्दशास्त्र का प्रयोग हुआ करता था। आधुनिक काल में भाषा-विज्ञान, शब्द-शास्त्र, शब्द-तत्त्व, भाषिकी आदि शब्द हिन्दी, मराठी व बंग्ला में प्रयुक्त हो रहे हैं। हिन्दी में भाषा-विज्ञान अपेक्षाकृत अधिक प्रचलित है।

भाषा-विज्ञान के अन्तर्गत भाषा का ही अध्ययन विशेष किया जाता है। जब किसी विशेष भाषा का व्याकरणिक दृष्टिकोण से अध्ययन किया जाता है तो वह वर्णनात्मक भाषा विज्ञान कहलाएगा। किसी एक भाषा का एक काल बिंदु पर अध्ययन एककालिक (संकालिक) पद्धति व कई कालों का सुशृंखलित अध्ययन बहुकालिक भाषा विज्ञान की पद्धति है।

भाषा का सर्वांगीण और वैज्ञानिक अध्ययन ही भाषाविज्ञान का विषय है। दूसरे शब्दों में ’भाषा विज्ञान वह विज्ञान है जिसमें भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है।‘‘

इस संक्षिप्त परिभाषा की कुछ बातें विचारणीय हैं तथा कुछ विस्तृत व्याख्या की अपेक्षा रखती है -

1. भाषा विज्ञान में भाषा का सर्वांगीण अध्ययन किया जाता है अर्थात् उसके सभी अंगों-उपागों का अध्ययन होता है।

2. यहाँ ’भाषा‘ शब्द का प्रयोग दो अर्थों में किया जा रहा है। एक तो ’भाषा विशेष‘ जैसे हिन्दी, अंग्रेजी, रूसी, संस्कृत आदि और दूसरे ’भाषा सामान्य‘।

3. भाषाविज्ञान में कई ’भाषा-विशेष‘ के अध्ययन-विश्लेषण द्वारा सामान्य नियम निकाले जाते हैं जो ’सामान्य भाषा‘ पर लागू होते हैं। वस्तुतः जिसे सामान्य भाषा विज्ञान कहते हैं वे सिद्धान्त मूलकः अनेक भाषाओं (विशेष) के अध्ययन-विश्लेषण के निचोड़ होते हैं। इस प्रकार भाषाविज्ञान में विभिन्न भाषाओं का अध्ययन-विश्लेषण तो किया ही जाता है, उस अध्ययन-विश्लेषण के आधार पर सामान्य भाषा की उत्पत्ति, उसमें परिवर्तन आदि विषयक सामान्य सिद्धान्तों का भी प्रतिपादन किया जाता है। ये दोनों प्रक्रियाएँ एक के बाद एक चलती रहती हैं। भाषाओं के विश्लेषण से सामान्य सिद्धान्त पुष्ट और विस्तृत होते हैं या उनमें बुद्धि होते है तथा नवविकसित सिद्धान्तों के प्रकाश में विशिष्ट भाषाओं के अध्ययन में विस्तार और गहराई आती जाती है।

4. भाषाविज्ञान में भाषा का अध्ययन समकालिक, ऐतिहासिक, तुलनात्मक तथा प्रायोगिक इन चार दृष्टियों से किया जाता है।

उपर्युक्त स्पष्टीकरण के आधार पर भाषाविज्ञान की कुछ विस्तृत परिभाषा इस प्रकार दी जा सकती है -

भाषा विज्ञान वह विज्ञान है, जिसमें - विशिष्ट, कई और सामान्य -का एककालिक, बहुकालिक या ऐतिहासिक, तुलनात्मक और प्रायोगिक दृष्टि से अध्ययन तथा तद्विषयक सिद्धान्तों का निर्धारण होता है।